# भा. कृ. अनु. प.– केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान

पहुज डेम के पास, ग्वालियर रोड, झाँसी (उ.प्र.) – 284003

## कृषिवानिकी सलाह (माहः सितम्बर)

- पानी भराव की स्थिति में, खेत में खड़ी फसलों से पानी के निकास की समुचित व्यवस्था करें।
- उड़द और मूँग फसलों में पीला मौजेक दिखाई देते ही, संक्रमित पौधों को उखाड़ कर जमीन में गाड़ दें अथवा जला दें।
- मूँग में फलियों की पहली तुड़ाई समय से पूर्ण करें तथा अगली तुड़ाई आवश्यकतानुसार करें।
- तोड़ी गयी मूँग की फलियों को अच्छी तरह से सूखाकर ही रखें, अन्यथा अधिक नमी होने से फलियों खराब हो सकती है।
- समय पर वर्षा जल न मिलने पर खेत में खड़ी हुई खरीफ फसलों में सिंचाई की व्यवस्था करें।
- फसलों की निगरानी करते रहें। रोगों एवं कीड़ों की रोकथाम के लिए जरूरत के अनुसार दवाइयों का उपयोग करें।
- खरीफ फसलों में बाकी नत्रजन की मात्रा को सुविधानुसार अवश्य पूरा कर लें।
- खेत की मेड़ों पर लगाये गये पेड़ों की उचित देखभाल करें तथा समय–समय पर खरपतवार उखाड़ते रहे तथा पेड़ों में पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- पेड़ों में समय–समय पर गुड़ाई करते रहें ताकि वायु का संचरण सुचारू रूप से हो सके, जिससे पेड़ों की बढ़वार अच्छी रहे।
- पानी भराव की स्थिति में उचित जल निकासी की व्यवस्था करें।
- कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए बचाव के सभी साधनों का उपयोग खेत में काम करते समय करें।
- नये लगे बगीचों में गैप फिलिंग/मृत पौधों की जगह नये पेड़ लगायें।
- रस चुसक व पत्तियों को खाने वाले कीटों का नियंत्रण करें।
- पुराने बगीचों में उर्वरकों तथा सुक्ष्म तत्वों की संस्तुत की गयी मात्रा देंवें।

## अ) नीबू में की जाने वाली क्रियाये

❖ उर्वरक निम्न मात्रा में प्रति पेड़ देंवें (पांच साल व उससे बड़े पेड़ों में)।

- युरिया–100 ग्राम प्रति पेड़,
- सिंगल सुपर फास्फेट–150 ग्राम प्रति पेड़,
- म्युरेट आफ पोटाश–75 ग्राम प्रति पेड़।
- इनको पेड़ के तने से एक फुट जगह छोड़कर थाले में मिलायें। तुरन्त बाद पानी लगायें।

❖ नीबू के पेड़ों में सुक्ष्म तत्वों की कमी को दूर करने के लिए निम्न मिश्रण को प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें :

- जिंक सल्फेट – 2 ग्राम
- फेरस सल्फेट – 2 ग्राम
- मेग्नीशियम सल्फेट – 2 ग्राम
- मेगनीज सल्फेट – 2 ग्राम
- बोरेक्ष – 1 ग्राम
- युरिया – 5 ग्राम
- चुना – 5 ग्राम

संतरे में जिंक की कमी के लक्षण

❖ सितम्बर माह में नींबू वर्गीय फल वृक्षों में हरी चिंटी, लाल चिंटी, लीफ माइनर, लेमन बटरफलाई लार्वा तथा मऊ का प्रकोप आता है तो निम्न दवाओं का छिड़काव करें

लेमन बटरफलाई का लार्वा

❖ लीफ माइनर तथा लेमन बटरफलाई लार्वा का प्रकोप नई पत्तियों पर ज्यादा आता है, इसका समय पर नियंत्रण करें। इसके नियंत्रण के लिए डाईमेथोएट / 2 मि.ली. प्रति लीटर या इमीडाक्लोप्राइड (कॉन्फीडॉर) / 0.3 मि.ली.प्रति लीटर के हिसाब से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।

❖ दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर तने पर क्लोरोपॉयरीफॉस / 2–3 मि.ली. प्रति लीटर के हिसाब से स्प्रे करें तथा इसी घोल से पेड़ों में ट्रेन्चिंग करें।

निंबू में केंकर के लक्षण

❖ नींबू में केंकर के नियंत्रण के लिये कॉपर ऑक्सीक्लोईड / 2–3 मि.ली. प्रति लीटर के हिसाब से स्प्रे करें।

## ब) अमरूद में की जाने वाली क्रियाये

❖ अमरूद के पेड़ों में सुक्ष्म तत्वों की कमी को दूर करने के लिए निम्न घोल का छिड़काव करें :

- जिंक सल्फेट – 2 ग्राम प्रति लीटर
- मैग्निशियम सल्फेट – 2 ग्राम प्रति लीटर
- चुना – 5 ग्राम प्रति लीटर

इस घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल में दो बार करें।

❖ पेड़ों के थालों की घास निकालकर गुड़ाई करें।

❖ अमरूद में छाल भक्षी कीट की रोकथाम के लिए कीट द्वारा बनाये गये जालों को साफ करें तथा छिद्रों में पतले तार के माध्यम से कीटों को मारें, रूई में केरोशिन के तेल को भिगोंकर छिद्रों में डालें तथा छिद्रों को चिकनी मिट्टी से बंद कर देंवें।

कृषिवानिकी संबंधित किसी भी जानकारी हेतु किसान भाई, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी (उ0प्र0) से सम्पर्क करें।

निदेशक
केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी